

असाधारण EXTRAORDINARY

भाग III—जण्ड 1 PARTIII—Section 1

प्राधिकार से प्रकारित PUBLISHED BY AUTHORITY

No. 4]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 26, 1982/श्रावण 4, 1904
NEW DELHI, MONDAY, JULY 26, 1982/SRAVANA 4, 1904

इस भाग में भिन्न पूछ संख्या को जाती है जिससे कि यह असन संकलन के रूप में रखा जा सक्त Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

आयकर आधिनयम 1961 (1961 का 43) की धारा 269 च (1) के अधीन सुचना

भादेश मध्या : राज /महा. भ्रा अर्जन/1250

भारत सरकार

कार्यालय सहायक भ्रायकर भ्रायकत (निरीक्षण) भर्जन रेंज, जयपुर

तारीख 14 जुलाई, 1982

यत. मुझे, मोहन सिंह, श्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की धारा 269ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिमका उचिन मूल्य 25,000/- ६० से प्रधिक है और जिसकी स० भृमि है तथा जो उदयपुर में स्थिन है, (भौर इससे उपाबद्ध धनुसूची में और पूर्ण रूप से विणित है) रिजस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय उदयपुर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम 1908 (1908 का 16) के अधीन, तारीख 5-10-1981 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम है दृश्यमान प्रतिफल के लिए प्रन्तरित की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके वृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्नाह प्रतिकात से प्रधिक है, भौर अन्तरक (अन्तरको) और अन्तरित (अस्तरित्यो) के बीच ऐसे धन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्नलिखन उदेश्य से उक्त धन्तरण कि लिए तय पाया गया है :—

(क) अन्तरण से हुई किसी आयं की बाबत, भायकर प्रधितियम, 1961 (1961 का 43) के मधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; भीर या

(ख) ऐसी फिसी ग्राय या किसी धन या ग्रन्य ग्रास्तियों को जिन्हें भारतीय ग्रायकर ग्रीप्रिनियम, 1922 (1922 का 11) या ग्रायकर ग्रीप्रिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन कर ग्रीप्रिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ ग्रन्तिती इत्तरा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

भ्रतः, भ्रब, उक्त मधिनियम की बारा 269ग के मनुसरण में मैं, उक्त प्रधिनियम की धारा 269 व की उपधारा (1) के प्रधीन, निभ्न-लिखित व्यक्तियो, मर्यात :—

- (1) श्रीमती सुजाता एन० सौनी पत्नि श्री नरेन्द्र सौनी, उदयपुर(ग्रन्तरक)
- (2) डाक्टर (मिसेज) मालती एस०, जोहरी, बम्बई ' ' (बन्तरिती)
- *(3) श्रो/श्रीमती/कुमारी ः (षह व्यक्ति जिसके प्रधियोग · · · · · · · · · · · · में संपत्ति है)
- *(4) श्री/श्रीमती/कृमारी : : : : (वह ज्यक्ति, जिसके बारे में : : : : : : : : श्रधोहस्तारक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हिनबद्ध है)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के वर्जन के लिए कार्य-वाहियां करना हूं। उक्त सम्पत्ति के प्रजीन के सम्बन्ध में कोई भी वाक्षेप---

(क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीश्व से 45 दिन की भविंध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तार्मील

- में 30 विन की श्रवधि, जो भी श्रवधि बाद में समाप्त होती। हो, के भीतर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से कियो व्यक्ति द्वारा;
- (खा) इस सूचना के राजपत में प्रकाणन की तारीख़ से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पक्ति में हिनग्रह किसी घ्रन्य व्यक्ति क्षारा, श्रधोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सरीगे।

स्पर्टीकरण—दसमें प्रयक्त शब्दो श्रीर पदो का, जो श्रायकर श्रीय-नियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20क में परिभाषित है, वही अर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसृष्

लैण्ड मेजरिंग 28,288 वर्गफ्ट जो बिस्टल वाटिका, उदयपुर जो उपपीजयक, उदयपुर हारा एम मंख्या 2284 दिनाक 5-10-81 पर पंजिबद विक्रय पत में ग्रीर विस्तृत रूप से विवर्णित है।

मोहन सिह,

तारीख 14-6-83

सक्षम प्राधिकानि

मोहर: (जो लागुन हो उसे काट शिकिए)

सहासक ग्रायकर ग्रायकत (निरीक्षण)

प्रजीत रेज, जयपर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961).

Ref. No. 1250

Government of India Office of the I.A.C. Acquistion Range, JAIPUR Date 14/7/82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-tax, Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter refereed to as have reason to believe that the the 'said Act'), immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 5-10-1981 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more, than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said. Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax: Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons, namely:--

- (1) Mrs. Sujata N. Soni, w/o Sh. Narendra Soni, Udipur. (Transferor)
- (2) Dr. (Mrs). Malti S. Johari, Bombay.

(Transfere e)

- *(3) Shri/Shrimati/Kumari Shri/Shrimati/Kumari
 (Persons in occupation of the Property).
- whom the under signed(Person knows to be interest.) *(4) Shri/Shrimati/Kumari knows to be interested in the poperty objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned :--
- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later :
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation: --The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter,

SCHEDULE

Land measuring 28 288 sq. ft. situated at Vithal Vatika, Udaipur and more fully described in the sale deed registered by S. R. Udaipur vide No. 2284 dated 5/10/81.

Date: 14/7/82

MOHAN SINGH,

Competent Authority

Seal:

(Inspecting Assistant Commissioner of Income-tax

Acquistion Range, Jaipur)

*Strike off where not applicable.

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की छाए। 269 च (1) के अधीन अधिमृचना

भ्रादेश संख्या . राजः/महा. भ्राः श्रर्जन/1251

भारत सरकार कार्यालय महायक ग्रायकर घाण्धन (निरीक्षण) भ्रजीन रेज, जयपुर

नारी**ख** 14-7-82

यत मुझे मोहन सिंह, श्रायकर श्रधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्राधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के भ्राधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विख्वास करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित मृल्य 25,000/- २० से अधिक है और जिसकी श्रीर शिक्की से भीर पूर्ण रूप में वर्णित है। रिजिस्ट्रीकर्ना प्रक्षिकारों के नायांन्य अनुसूर्जी में श्रीर पूर्ण रूप में वर्णित है। रिजिस्ट्रीकर्ना प्रक्षिकारों के नायांन्य उदयपुर में, रिजिस्ट्रीकरण प्रक्षितियम, 1908 (1908 को 16) के अश्रीन, तारीख 5-10-1981 को पूर्वांक सम्पत्ति के उचित बाजार मृख्य से कम के दृश्यमान प्रतिकल के लिए प्रत्निरित वी गई है श्रीर मुझे यह विश्वाम करने का कारण है कि यथापूर्वोंक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृख्य उसके दृश्यमान प्रतिकल में, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पन्द्रह प्रतिणत में श्रिष्ठिक है, भीर प्रत्नारक (अन्तरका) श्रीर अन्तरित (अन्तरियो) के बाच ऐसे अन्तरण के तिण तय पाया गया प्रतिकल तिम्बलिखन उट्टेण्य से उक्त अन्तरण विखित में बारतिक रूप से कथित नहीं किया गया है -

- (क) श्रन्तरण सं हुई किसी की आय की बाबत प्रायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 44) के प्रधीन कर देने के अन्तरक के दायित्व में नमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; श्रीर या
- (ख) एसी किसी प्राय या निर्मी धन या प्रत्य आस्तियों सा निर्मेश भाग्तीय आयकर प्रधिनियम, 1922 (1922 का 11) या प्रायकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 13) या धन कर प्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ प्रत्निती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए या, छिपाने में सुविधा के लिए

भ्रत भ्रव उक्त श्रीधनियम की धारा 269ग वे श्रतुसरण में मैं उक्त श्रीधनियम की धारा 269श की उपधारा (1) के श्रवीन निम्तर्लिखन व्यक्तियों, भ्रथीन —

- (1) श्री सुरेन्द्र पुत्र श्री मोहन लाल सैनी द्वारा प्राप्तुर्वेद सेवाश्रम, उदयपुर (ग्रन्थरक)
- (2) डाक्टर (मिमेज) मालती एस जीहरी, बस्कई (अल्बरिती)
- *(३) श्री/श्रीमती/कृमारी (वह व्यक्ति जिसके श्रधियाग.मे सम्पत्ति है)
- (क) इस सूचना के राजपत में प्रकाशन की तारित्य से 15 दिन की प्रविध या तक्सम्बन्धी व्यक्तिया यर सूचरा की नामाल से 30 दिन की प्रविध जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हा, के भीतर पूर्वोक्त व्यक्तिया में से किसी व्यक्ति हारा,
- (ख) इस सूचना के राजपक्ष में प्रकाणन की नारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी प्रस्य व्यक्ति हारा, प्रश्लोहस्नाक्षरी के पास लिखिन में किये जा सकी।

स्थल्टीकरण—हममे प्रयुक्त शब्दा ग्रीर पदो का, जो श्रायकर ग्रधितियम, [1961 (1961 वा 43) के ग्रध्याय 20क मे परिभाषित है, बही ग्रर्थ हाना जो उस ग्रध्याय में दिया नमा है।

अनुसृची

कैण्ड मेर्जारम 20,470 वर्गफुट स्णित विठल वाटिका उदयपुर जो उपप्रजियक, उदयपुर द्वारा क्स सख्या 2281 दिनाक 5-10 51 पर प्रजिबद्ध विक्य पत्र में भ्रीर बिस्तृत अप से विथरणित है।

माहन सिह

तारीख 14-7-82 मध्यम प्राधिनारी मोहर महायक ग्रायक्त आधुक्त (निरीक्षण) *(जो लागृन वा उसे काट दीजिए) ग्राजैन रेज, जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269 D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. 1251

Government of India
Office of the I.A
Acquistion Range, Jaipur
Date: 14-7-82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have leason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the Schedule annexed hereto), has been transfered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 5-10-81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than lifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said. Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquistion of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269 D of the said Act to the following persons namely:—

- (1) Shri Surendera S/o Mohanlal Smi, C/o Ayurved Sewasharam, Udaipur (Transferor)
- (2) Shri/Shrimati/Kumari..., Dr. (Mrs. Małti S. Johari, Bombay (Transferee)
- *(3) Shu/Shrimati/Kumari(Person in occupation of the ..., property)
- (4) Shri/Shrimati/Kumari (Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections, if any to the acquisition of the said property

may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Land measuring 20,470 sq. ft. situated at Vithal Vatika, Udiapur and more fully described in the sale deed registered by S.R. Udaipur vide No. 2281 dated 5-10-81.

MOHAN SINGH

Date: 14-7-82

Competent Authority

Seal:

Inspecting Assistant Commissioner of Income-Tax Acquistion Range, Jaipur

*Strike off where not applicable

जायकर अधिनियस 1961 (1961 का 43) की धारा 269 घ (1) के अधीन सूचना

भावेश संख्या:राज०/सहा०/भा०/भर्जन/1252

भारत सरकार सकारक प्रकार सामका (निर

कार्यालय सहायक श्रायकर श्रायक्स (निरीक्षण) श्रजम रेज, जयपुर, तारीख 14-7-82

यतः मुनै मोहन सिंह, आयकर धिविधम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उन्त प्रधिनिधम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन सक्तम प्राधिकारी को, यह विश्वाध करने का कारण है कि स्थावर संपत्ति, जिसका उचित मूल्य 25,000/- रं से अधिक है और जिसकी सं भूमि है तथा जो उवयपुर में स्थित है, (और इससे उपावद धनुसूची में और पूर्ण रूप से पणित है) रजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारी के कार्यालय उवयपुर में, 'जिस्ट्रीकरण प्रधिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन, गार्थिख 13-10-81 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के दृष्यमान प्रतिफल के लिए प्रन्तरित की गई है और मुनी यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृष्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृष्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रसिवत से धिक है, और प्रस्तरक (प्रन्तरकों) और प्रन्तरिती (धन्तरिसी) के बीच ऐसे प्रस्तरण के लिए तथ पाया गया प्रतिफल, नेम्नलिकत उवेश्य से उक्त धन्तरण लिखत में वास्तिवक रूप से कथित हैं। किया गया है:—

(क) अन्तरण से हुई किसी धाय की बाबत, भायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के अन्तरक के वायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए; भीर/मा (अ) ऐसी किसी आप या किसी धन या भन्न आस्थियों को जिन्हों भारतीय शायकर अधिनियम, 1922 (1922 का 11) या आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या धन कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था किया जाना चाहिए था, छित्रान में सुविधा के लिए;

भागः अब उक्त प्रधिनियम की धारा 269 ग के प्रनुसरण में, मे, उक्त प्रधिनियम की धारा 269 घ की उपप्रारा (1) के प्रधान, निम्निलिबात व्यक्तियों, प्रधान: —

- (1) श्रीमती शान्ती एस. सीनी परिन श्री सुरेन्द्र भौनी द्वारा एस० एव० सौनी, प्रायुक्त नेवाश्रम, उदयपुर—(प्रन्तर कः)
- (2) डा० (मिसेज) मालती एम० जोहरी, बम्बई (ग्रन्भरिती)
- *(3) श्री/श्रीभती/कुमारी गीग

कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

(वह व्यक्ति जिसके श्रधि-मे सम्पक्ति है)

*(4) श्री/श्रीमती/नुमारी बारे में

(वह व्यक्ति, जिसके भधोहम्ताक्षरी जानता है

को यह मूचना जारी करके पूर्वोक्स सम्पत्ति के श्रजंन के क्षिए कार्य-वाहियों करता हूं। उक्त सम्पत्ति के श्रजंन के सम्बन्ध में कोई भी श्राक्षेप—

- (क) इस सूचना के राजपत्न में प्रकाशन की नारीख से 45 दिन की अविधि या तत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 दिन की धविध, जो भी अविधि बाद मे समाप्त होती हो, के भीतार पूर्वोक्स व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा;
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन कें भीतर उक्त स्थावर सम्पत्ति में हिसवद्ध किसी ग्रन्थ व्यक्ति द्वारा, ग्रधोहस्ताक्षरों के पास लिखित में किये जा सकोंगे।

स्पब्टीकरण--इसमें प्रयुक्त शब्दों और पदों का, जो ग्रायकर मधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रध्याय 20क में परिभाषित है, वही ग्रर्थ होगा जो उस ग्रध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

सैण्ड मेजरिंग 20,167.5 वर्ग फुट जो विठल आहिका, उत्तयपुर में स्थित है मौर उपपंजियक, उत्तयपुर द्वारा कम संख्या 2280 दिनांक 13-10-81 पर पंजिबद्ध विकाय पत्र में भौर विस्तृत रूप से विवरणित है।

मोहन सिष्ट

तारीख 14-7-82.

सक्षम प्राधिकारी

मोहर

महासक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

*(जो लागून हो उसे काट वीजिए)

म्रर्जैन रेंज,जयपूर

NOTICE UNDER SECTION 269, D(1) OF THE INCOME-TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1252

Government of India
Office of the I.A.C.
Acquisition Range, JAIPUR

Date: 14-7-82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Land situated

at Udaipur (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 13-10-81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

(1) Shrimati Shanti S. Soni w/o Shri Srendera Soni,

C/o M.H. Soni, Ayurved Sewashram, Udaipur(Transferor)

- (2) Shrimati Dr. (Mrs.) Malti S. Johari, Bombay(Transferee)
- *(3) Shri/Shrimati/Kumari.....(Person in occupation of theproperty).
- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expire later:
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:— The torms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Land measuring 20, 167.5 sq. ft. situated at Vithal Vatika, Udaipur and more fully described in the sale

deed registered by S.R. Udaipur vide No. 2280 dated 13-10-81.

MOHAN SINGH.

Date: 14-7-82

Competent Authority

Scal: (Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur).

*Strike off where not applicable

आपक्र अधिनियम 1961 (1961 का 43) की बारा 269 ध (1) के अधीन सुचना

भादेश संख्या: राज०/सहर्ष्ण भाग भाजीन/1253 भारत सरकार कार्यालय महायक भायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) भाजीन रेंज, जयपुर

तारीख 14-7-82

यतः मुझे मोहन सिह, प्रायकर प्रधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात् 'उक्त प्रधिनियम' कहा गया है) की छारा 269 ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी को, यह विश्वाम करने का कारण है कि स्थावर सम्पत्ति, जिसका उचित मूल्य 25,000/ ६० से प्रधिक है और जिसकी सं० भूमि है तथा जो उदयपुर में स्थित है, (और इससे उपावद्य धनुसूकी में भीर पूर्ण क्य से विणित है) रिजस्ट्रीकर्ती प्रधिकारी के कार्यालय उदयपुर में, रिजर्स्ट्रीकरण प्रधिनियम 1908 (1908 का 16) के प्रधीन, तारीख 14-10-81 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के उचित बाजार मूल्य से कम के वृश्यमान प्रतिकाल के लिए प्रन्तरित की गई है और मुझे यह विण्यास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिकात से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकात के पन्द्रह प्रतिभात से अधिक है भीर अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरिती (अन्तरित्यां) के बीच ऐसे प्रन्तरण के लिए स्थ पाया गया प्रतिकात, तिस्न-लिखित उद्देश्य से उक्त प्रन्तरण के लिए स्थ पाया गया प्रतिकात, तिस्न-लिखित उद्देश्य से उक्त प्रन्तरण किखित में वास्थिक क्य से कथित नहीं किया गया है:—

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसी ग्राय की बाबत, आयकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के प्रधीन कर देने के ग्रन्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए ग्रीर/या
- (का) ऐसी किसी भ्राय था किसी धन या भन्य भास्तियों को जिन्हें भारतीय भाय-कर भिक्षितियम, 1922 (1922 का 11) बा भ्रायकर भिक्षितियम 1961 (1961 का 43) या धन कर भ्राधितियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भन्तिरिसी द्वारा प्रकट महीं किया गया था या किया जाना आहिए था, छियाने में सुविधा के लिए;

ग्रतः, श्रवः, उक्तः प्रधिनियमं की घारा 269 ग के मनुसरण में, मैं, उक्त श्रीधनियम की धारा 269 घ की उपक्षारा (1) के प्रश्लीक, निस्तु-लिखित व्यक्तियों, अर्थात् .--

- (1) श्री नरेन्द्र एम० सौनी पुत्र मोहन लाल सोनी द्वारा भायुर्वेद सेवाश्रम, उदयपुर (भ्रन्तरक)।
- (2) डा० (मिसेज) मालती एस० जाहरी, बम्बई (ग्रस्तरिती)।
- (3) श्री/श्रीभती/कुमारी '''' (वह व्यक्ति जिसके प्रश्चिमो 'में सम्पत्ति है)।

को यह सूचना जारी कश्के पूर्वोक्त भम्पत्ति के श्रर्जन के लिए कार्य-वाहियां कश्ता हूं। उक्त भम्पत्ति के श्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी श्राक्षेप-

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की भ्रयधि था नल्सम्बन्त्री व्यक्तियों पर सूचना की नामील से 30 दिन की अवांध, जो भी अवांध बाद में समाप्त साती हो के भीकर पूर्वाकत व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सम्मत्ति में हिन्दबद्ध किसी ग्रन्थ व्यक्ति इस्ता अधीहम्माक्षरी के पास लिखन में किये जा सकेंगे।

स्पन्टीकरण---इसमे प्रयुक्त शब्दों भीर पदी का, जो श्राप्रकर श्रक्षि-नियम, 1961 (1961 का 43) के श्रष्ट्याय 20 क मे परिभागि है, वहीं शर्थ होगा जो उस सरवाय मे किया गया है।

अनुसूची

प्लाट आफ लैंग्ड मेकिन्स 27,696 वर्गफुट स्टोर हाक्त एव फार्स हाउस सहित, स्थित विकित वाटिका उदयपुर को उप प्रतियक, उदयपुर द्वारा कम संख्या 2283 दिनाक 14-10-81 पर प्रजेबद्ध विकय पन्न में झौर विस्तृत रूप में विवरणित है।

> (मोह्र-सिंह) सक्षत प्राधिकारी

तारीख 14-7-82

मोहर

सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

*जो क्षागून हो उसे काट वै।जिए

धर्जन रेज, जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME. TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1253

Government of India

Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR
Date 14-7-82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax, Act, 1961 (43 of 1961) (herein-after referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. Land situated at Udaipur (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transfered under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 14/10/81 for an apparent consideration which is less the fair Market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian

Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 26°C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

- (1) Shri Narendra M. Soni
 S/o Mohanlal Soni,
 C/o Ayurved Sewashram,
 Udaipur.....(Transferor)
- (2) Shri/Shrimati/Kumari Dr. (Mrs.) Malti S. Johari, Bombay(Transferee).
- * (3) Shri/Shrimati/Kumari(Person in occupation of the property).
- *(4) Shri/Shrimati/Kumari (Person whom the undersigned knows to be interested in the property) objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—
- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:- The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

Plot of land measuring 27,696 sq. ft. including Store house and farm house situated at Vithal Vatika Udaipur and more fully described in the sale deed registered by S.R. Udaipur vide No. 2283 dated 14-10-81.

MOHAN SINGH,

Date 14-7-82

Competent Authority

Seal:

(Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur).

*Strike off where not applicable

अत्यक्तर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की धारा 269 व (1) के अधीन स्वन।

प्रादेश सख्या . राज० सहा०प्रा० प्रार्जन / 1254

भारत सरकार

कार्यालय सहायक श्रायकर आयुक्त (निरीक्षण).. श्रर्जन रेज,

तारीख 14-7-82

यत. मुझ मोहन सिह, श्रायकार श्रीधिनियम 1961 (1961 को 43) (जिसे इसमें इसके पश्चान् 'उक्त श्रीधिनियम' कहा गरा है) की धारा 279ख के श्रीचीन सक्षम श्रीधिकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि

स्थावर सम्पन्ति, जिसका उचित मृत्य 25000 के से स्विधित है और जिसकी में भूमि है स्था जा उद्युप्त में स्थित है, (भीर इपसे उपान्य अध्युप्त में स्थान है, (भीर इपसे उपान्य अध्युप्त में स्थान है) रिवर्ड़ किनी स्थानकारी के कार्यान्य उदयुप्त में, रिजर्ड़ किरण स्थितियम, 1908 (1908 का 16) के स्थीन कारीख़ 15-10-81 की पूर्वोक्त सम्पन्ति के उचित बाजार मृत्य में सम के दृश्यमान प्रतिकाल के लिए स्वत्यार के गई है स्थीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पन्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके दृश्यमान प्रतिकाल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकाल के पद्धद प्रतिगान संभिक्ष है स्थीर सन्तरक (स्वत्यका) स्थीर सन्तरित (स्वतिविधित उद्देश्य में उसत सन्तरण लिखित में वास्तविध स्था प्रवासित है किया गया है --

- (क) भ्रत्यरण से हुई किसी भ्राय की बाबात, श्रायकर श्रिधिनियस, 1961 (1961 का 13) के श्रेत्रीन कर देने के भ्रन्तरक के दायित्व में कर्मा करने या उससे अपने में सुविधा के लियं भ्रीर; या
- (ख) ऐसी किसी काय या किसी धन या कैन्य आस्तियों को जिन्हें भारतीय काय-कर किसिन्यम, 1922 (1922 का 11) या अध्यकर अधिनियम, 1961 (1961 के 13) या धनपर किसिन्यम, 1957 (1957 को 27) के प्रयाजनार्थ, भन्निरित्ती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था छिपाने में मुविधा के लिए,
- क्षत अब उक्त प्रधिनियम की धारा 269 ग के अनुगरण म, मै, उक्त अधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के अधीन, निष्निलिखिन व्यक्तिया, अर्थान् ---
- (1) श्री मोहन लाल पुत्र ह्रीरा लाल सोनी द्वारा आधर्वेद सेवाश्रम प्रदेशपुर (श्रन्तरक)
- (2) डाक्टर (मिसेज) मानती एस० जोड़री, बम्बई (ब्रन्टरिती)
- *(३) श्री/श्रीमनी/कृमारी (यह व्यक्ति जिसके श्रिधियोग में सम्पन्ति है)
- *(4) श्री/श्रीमती/कुमारी (यह व्यक्ति, जिसक बारे में श्रधाहरूनाक्षरी जानना है कि वह सम्पत्ति में हिन्दग्रह है)

को यह सूचना जारी जरक पूर्विक्त सम्पत्ति के ध्रजेंन के लिए कार्य-वाहिया करता है। उक्त सम्पत्ति के ध्रजेंन के सम्बन्ध में कोई भी ध्राक्षेप--

- (क) इस सूचना के राजपक्र में प्रकाण की नारीख से 45 दिन की अविध या कत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूबना की नामील से 30 दिन की अविध, जो भी प्रविध बाद में समान होती हो के भीतर पूर्वीका व्यक्तियों में से किया व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाणन की तारीख में 45 दिन के भीतर उकत स्थावर सम्पत्ति में हितबंद कि ती ग्रन्थ व्यक्ति होरा, ग्रश्चीहरूनीक्षरी के पास लिखिन में किए जा सकते।

स्पष्टीकरण---इसमें प्रयुक्त शब्दों ग्रीर पदों का जो श्रायकर ग्रिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के श्रव्याय 20 के में परिभाषित है, बही अर्थ होगा जो उस श्रध्याय में दिया गया है।

धन्सूची

सम्पत्ति, 16,946 वर्गफुट जमीन महित, स्थितः विठल बाटिका, पिछोल। झील, उदयप्र जो उप पंजीयक, उदयप्र द्वारा कम सठ 2282 दिनाक 15-10-81 पर पत्रीबद्ध विकाय पत्र में ग्रीर विस्तृत स्र में विवरणित है।

तारीख 14-7-82 मोहन सिंह, सक्षम प्राधिकारी मोहर सहायक प्रायकर प्रायक्त (निरीक्षण)

*(जालागून हो उसे काट दर्जिंग)। % र्कन रेज **ज**यपुर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ret. No. 1254/

Government of India
Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR
Dated 14/7/82

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-Tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No. Land situated at Uadipur (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Udaipur on 15/10/81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen per cent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of-

- (a) facilitating the reduction or cvasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

- (1) Shri Mohan Lal S/o Heeralal Soni C/o Arurved Sewashram Udaipur. (Transferor)
- (2) Shrimati Dr. (Mrs.) Malti S. Johari, Bombay (Transferec)
- *(3) Shri/Shrimati/Kumari..... (Person in occupation of the property)
- *(4) Shri/Shrimati/Kumari......(Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections, if any, to the

acquisition of the said property may be mad in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act. shall have the same meaning as given in that Chapter.

THE SCHEDULE

Property including 16.946 sq. ft. of land situated at Vithal Vatika Pichhola Lake, Udaipur and more fully described in the sale deed registered by S.R. Udaipur vide No. 2282 dated 15/10/81.

MOHAN SINGH.

Date 14/7/82

Competent Authority

Scal: (Inspecting Asstt.Commissioner of Income-Tax Acquisition Range, Jaipur.
*Strike off where not applicable

आयकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) की धारा 269 च (1) के अधीन सचमा

ग्रादेश संख्या . राज / सहा० ग्रा० ग्रर्जन / 1255

भारत सरकार

कार्यालय महायक मायकर भागुक्त (निरीक्षण) मर्जन रेंज जयपुर नारीख 14-7-82

यतः मुझे मोहन सिंह आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमें इसके पश्चात 'उक्त श्रिधिनियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के अधीन सक्षम प्राधिकारी का, यह विश्वास करने का कारण है कि स्वांवर सम्पत्ति, जिसका उवित मृह्य 25,000/- रू० से अधिक है और जिसकी सं० कृषि भूमि है तथा जो श्रीगंगानगर में स्थित है, (श्रीर इससे उपाबद अनुसुची में और पूर्ण रूप से वांणत है) रिजिस्ट्रीकर्ता अधिकारी के कार्यालय श्रीगंगानगर में, रिजस्ट्रीकरण अधिनियम, 1908 (1908 का 16) के अश्रीन, सारीख 7-10-1981 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के जिता आजार मृत्य से कम के दृण्यमान प्रतिकल के लिए अन्तरिम की गई है और मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथापूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मृत्य, उसके वृण्यमान प्रतिकल, से, ऐसे दृश्यमान प्रतिकल के पत्तवह प्रतिश्रात से अधिक है, और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित का पत्तकल के पत्तवह प्रतिश्रात से अधिक है, और अन्तरक (अन्तरकों) और अन्तरित (अन्तरितयों) के बीज ऐसे अन्तरण के लिए तय पाया प्रतिकल निम्मिखिस उद्देश्य से उक्त अन्तरण लिखन में वाम्मिखक रूप से कथिन मिन्निक्ति किया गया है:

- (क) ग्रम्तरण से हुई किसी श्राय की बाबत, श्रायकर प्रधितियम, 1961 (1961 का 43) के श्रधीन कर देने के श्रम्तरक के दायित्य में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए ग्रीर; या
- (का) ऐसी किसी ग्राय या किसी अन या प्रत्य मास्थियो को जिन्हें भारतीय ग्राय-कर मिलिनियम, 1922 (1922 का 11) या ग्रायकर मिलिनियम, 1961 (1961 का 43) या श्रन

कर अधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ अन्तरिती द्वारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के लिए;

भन श्रम, उक्त भिनियम की धारा 269 ग के धनुमरण में, मैं उक्त श्रीधिनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के श्रधीत, निम्निलिखन व्यक्तियों, अर्थान -

- (1) श्री अर्जुन सिंह श्राह्ंजा पुत्र श्री सूखा मिह निवासी 29 पिकन क पार्क श्री गंगानगर -----(अन्तरक)
- (2) श्रीमती मधुलिका कुमारी युवारानी नाविका श्राक मलया निवासी 121 एल मार्क कारमिकल रोड बम्बई (श्रव्तन्ति))
- *(3) श्री /श्रीमत्भि / कुमारी -----(वह व्यक्ति जिसके ग्रिधियोग

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के धर्जन के जिए कार्य-वाहिया करना हु उक्त सम्पत्ति के घर्जन के सम्बन्ध में कोई भी घाओप-

- (क) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीख से 45 विन की सबिध या नत्मम्बन्धी व्यक्तियों पर सूबना की नामील से 30 दिन की सबिध, जो भी सबिध बाद में सामन्त होती हो, के भीतर पूर्वीका व्यक्ति में से किसी व्यक्ति द्वारा ।
- (ख) इस सूचना के रीज पत्न में प्रकाशन की लारीज से 4.5 दिन के भीतर उंक्त स्थावर सम्पत्ति में हिनबद्ध किसी भन्य व्यक्ति द्वाएं।, प्रश्लोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्पष्टीकरण—इसमें प्रमुक्त शब्दों ग्रीर पवो, का, जो आधकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रह्माय 20 या क में परिशाधित है, बही ग्रर्थ होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अनुसूची

37 बीधा कृषि भूमि स्थित चक 1 छोटी श्रीगंगानगर, जो उप पंजियक, श्रीगंगानगर द्वारा श्रम सख्या 2197 दिनाक 7-10-81 पर पंजिबद्ध विश्रय पत्र में श्रोर विस्तृत रूप में विकरणित है।

(मोहन सिंह सक्तम प्राधिकारी)

नारीख 14-7-83

मोहर : ... सहायक आयकर आयुक्त (निरीक्षण)

*(जो लागुन हो उसे काट दीजिए)

अर्जन रेंज जयपुर

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1255/

Government of India Office of the I.A.A.C. Acquisition Range, JAIPUR Date 14/7/82.

Whereas, I Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income-tax Act, 1961 (43 of 1961) (hereinafter referred to as the 'said Act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000/- and bearing No. Agri. land situated at Sriganganagar (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under

the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering Officer at Sriganganagar on 7/10/81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of—

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Income-tax Act, 1922 (11 of 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said Act to the following persons namely:—

- (1) Shri Arjun Singh Ahuja s/o Shri Sukha Singh ('Transferor) R/o 29-Public Park, Sriganganagar.
- (2) Shrimati Madhulika Kumari Yuvarani Sahiba of Maliya (Transferee) 121-Land Mark Carmichel Road, Bombay.
- *(4) Shri/Shrimati/Kumari......(Person whom the undersigned knows to be interested in the property objections if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersined:—
- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used, herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that chapter.

THE SCHEDULE

37 bigha of agriculture land situated at Chak 1-E Chhoti, Sriganganagar and more fully described in the 492GI/82-2

sale deed registered by S.R. Sriganganagar vide No. 2197 dated 7-10-81.

(MOHAN SINGH)

Date 14/7/82

Competent Authority

Seal

(Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur.)

'Strike off where not applicable,

आयकर अधिनियम 1961 (1961 का 43) की छारा 269 घ (1) के अधीन सूचना

ग्रादेश सक्या : राज०/महा० भ्रा० भ्रार्जन/1256

भारत सरकार

कार्यालय सहायक श्रायकर श्रायुक्त (निरीक्षण) श्रर्जन रेज जयपुर सर्वन्त्र 14 जुलाई, 1982

यत मुझे मोहन सिह, अन्यवर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके पश्चात 'उक्त श्रश्नियम' कहा गया है) की धारा 269 ख के प्रधीन सक्षम प्राधिकारी की, यह विश्वास करने का कारण है कि स्थाबर सम्पत्ति, जिसका उजित मृत्य 25,000/- २० से प्रक्रिक है भीर जिसकी स॰ कृषि भूमि है तथा जा श्रीगगानगर मे स्थित है, (भीर इसमे उपाबद्ध प्रमुर्च। मे प्रौर पूर्ण रूप से वर्णित है) रजिस्ट्रीकर्ता ग्रक्षिकारी के कार्यालय थी। गगानगर में र्गजस्ट्रीकरण ग्रक्षिनियम, 1908 (1908 का 16) के प्रधीन, तारीखा 12-10- भा को पूर्वीक सम्पत्ति का उचित बाजार मुख्य, से कस के दश्यमान प्रतिफल के लिए अन्तरिक्ष की गई है भीर मही यह विकास करने का कारण है कि यथापूर्वीकर सम्पत्ति का उचित बाजार मह्य उसके दुष्यमान प्रतिफल से ऐसे दुश्यमान प्रतिफल के मधिक है, भीर अन्तरक पन्द्रष्ट प्रतिशत से (ग्रन्सरको) भौर भन्नरिती (भन्नरितियो) के बीच ऐसे भन्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिकल, निम्नलिखित उद्देश्य से उक्त प्रस्तरण लिखन मे वास्तविक रूप मे कथित नही किया गया है —

- (क) ग्रन्तरण से हुई किसी ग्राय की बाबत, ग्रायकर मिधिनियम, 1961 (1961 का 43) के ग्रधीन कर देने के ग्रन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में सुविधा के लिए ग्रीर, या
- (ख) ऐसी किसी माय या किसी झन या मन्य मास्तियो हो जिन्हें भारतीय माय-कर प्रकितियम, 1972 (1922 का 11) या भायकर अधिनियम, 1961 (1961 का 43) या भ्रम-कर प्रधिनियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ भन्तिति हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में सुविधा के निए

ग्रात अब उक्त प्रशितियम की धारा 269 य के भ्रतुसरण में, मैं, उक्त प्रशितियम की धारा 269 छ की उपधारा (1) के प्रजीत, तिम्न-लिखिन व्यक्तियों, अर्थात —

- (1) श्री प्याण सिह, स्वर्ण सिह एव बेचिस्तर सिह पुत्र श्री **बरयाम** सिह निवासी चक 1 ए छोटं, श्रीगानगर (श्रम्सरक)
- (2) मैसर्स गणेश उब्योग, 1-0 छोटी श्रीगंगानगर (ग्रास्तरिकी)
- *(3) श्री/श्रीमरी/कृमः री -- ----(बह व्यक्ति जिसके शक्तियोग
- *(4) श्री श्रीभती | कुमारी ' ' ' ' (वह व्यक्ति, जिसके बारे में मस्रोहरताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है)

को यह मूचना जारी करके पूर्वीक सम्पत्ति के अर्जन के लिए कार्य-वाहियां करता है उक्त सम्पत्ति के अर्जन के सम्बन्ध में कोई भी ग्राक्षेप--

- (क) इस सूचना के राजपन्न में प्रकाणन की तारीख से 45 दिन दिन की ग्रविध या तथ्मस्वन्छी अपोक्तयों पर सूचना की तामील से 30 दिन का ग्रविध, जो भी ग्रविध बाद में समाप्त होती ही, के भातर पूर्वीक्त व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन को नाराख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सस्पत्ति में हिनबद्ध किसी अन्य व्यक्ति बारा, अबीहरूनाक्षरा के पास लिखिन में किये जा सकेंगे।

स्पर्टाकरण --इसमें प्रयुक्त शब्दो धौर पर्दो का, जो प्रायकर प्रधिनियम, 1961 (1961 का 43) के अध्याय 20 के में परिभाषित है, वही वर्षे होगा जो उस अध्याय में दिया गया है।

अमुसुचिः

8 बाधा कृषि भूमि रियत चक 1 ए छोनः, श्रागंगानगर जो उन्देशियक, श्रीगमानगर द्वारा कम संख्या 2285 दिनाक 12-10-81 पर पणिवद्ध विकथ पत्र में और विस्तृत क्य से विवरणित है।

(माहन मिह)
सक्षम प्राधिकारः।
सारीख 14-7-8: सहायक ग्रायकर आयुक्त(निरिक्षण)
मोहर अर्जन रेंज जयप्र
*जी लागू न हो बाट दे जिए।

NOTICE UNDER SECTION 269D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1256/-

Government of India

Office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR
Date: 14/7/82

Whereas, I, Mohan Singh being the competent authority under Section 269D of the Income-tax, Act, 1961 (43 of 1961)(herein after referred to as the 'said Act'), and bearing No.Agi. land situated at Sriganganagar (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the Registering officer at Sriganganagar on 12/10/81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of -

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferce for the purposes of the Indian Income Tax-Act, 1922(11 to 1922) or the said Act or the wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957):

Now, therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for

the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said act to the following persons, namely:—

- (1) Shri Pyara Singh, Swaran Singh and Bachittar Singh sons of Sh. Varyan Singh R/o Chak 1-A Chhoti, Sriganganagar. (Transferor)
- (2) M/s. Ganesh Udyog 1-A Chhoti, Sriganganagar.(Tansferee)

- (a) by any of the aforesaid persons within a period of 45 days from the date of publication of this notice in the official Gazette or a period 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the official Gazette.

Explanation:— The terms and expressions used herein as are defined in chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that chapter.

THE SCHEDULE

8 bigha of agriculture land situated at Chak 1-A Chhoti, Sriganganagar and more fully described in the the sale deed registered by S. R. Sriganganagar vide No. 2285 dated 12-10-81.

Date 14-7-82

(MOHAN SINGH)

Seal:

Competent Authority (Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jalpur)

* Strike off where not applicable

आयकर अधिनिमम 1961 (1961 का 43) की धारा 269 घ (J) को अधीन सचना

ग्रादेश सन्त्रा : राज / महा ० भा० भर्जन /1257

भारत सरकार .

कार्यालय महायक भ्रायकर प्रायुक्त (निरोक्षण) अर्जन रेंज, जयबुर नारीखा : 14 जुलाई, 1982

यत्त. मुझे मोहन सिष्ट् भ्रायकर भ्रधिनियम 1961 (1961 का 43) (जिसे इसमे इसके परचान उक्त भ्रधिनियम कहा गया है) का धारा 269 'खें के भ्रधीन सक्तम भ्राधिकारी को, यह विश्वास करने का कारण है कि

स्थावर सम्पत्ति, जिसका जिन्ति मूल्य 25,000/- कर से प्रधिक है घौर जिसकी सं भवन है तथा जो श्रीगंगानगर में स्थित है, (धौर इसमे उपाबद धनुसूबी में घौर पूर्ण कप से बिजित है) रिजिस्ट्रीकर्ता प्रधिकारों के कार्यान्य श्रीगंगानगर में, रिजिस्ट्रीकरण श्रीधिन्यम 1908 (1908 का 16) के ग्रधान, तारं खा 5-10-1981 को पूर्वोक्त सम्पत्ति के जिल बाजार मूल्य से कम के दृश्यमान प्रतिफल के लिए शन्तरित की गई है श्रीर मुझे यह विश्वास करने का कारण है कि यथा पूर्वोक्त सम्पत्ति का उचित बाजार मूल्य, उसके दृश्यमान प्रतिफल से, ऐसे दृश्यमान प्रतिफल के पन्द्रह प्रतिशत से श्रीधक है, श्रीर श्रान्तरक (भ्रान्तरकों) भीर श्रान्तरिती (भ्रान्तरिती) के बीच ऐसे श्रान्तरण के लिए तय पाया गया प्रतिफल, निम्तिलीखन उद्देश्य से उक्त ग्रान्तरण लिखन मे बास्मविक रूप से कथित नहीं। किया गया है: —

- (क) ध्रन्तरण से हुई किसी ग्राय की बाबत, ग्रायकर भिधितियम, 1961 (1961 का 43) के भर्धान कर देने के श्रन्तरक के दायित्व में कमी करने या उससे बचने में गुविधा के लिए भीर; या
- (ख) ऐसी किसी प्राय या किसी धन या प्रत्य प्रास्तियों की जिन्हें भार तै यप्राय-कर प्रश्चितियम, 1922 (1922 का 11) या प्रायकर प्रश्चितियम, 1961 (1961 का 43) या धत-कर प्रश्चितियम, 1957 (1957 का 27) के प्रयोजनार्थ प्रत्ति हारा प्रकट नहीं किया गया था या किया जाना चाहिए था, छिपाने में मुविधा के लिए.

श्रव: श्रव उक्त श्रविनियम की धारा 269 म के श्रवुसरण में. में, उक्त श्रविनियम की धारा 269 घ की उपधारा (1) के श्रवीन विस्त-लिखित व्यक्तियों, श्रयांत :—

- (1) श्री महाबीर प्रसाद गुप्ता पुत्र श्री नानक चन्द गुप्ता निवासी गंगानगर वर्तमान निवासी 3 प्रीप्तम रोड शालानवाला, देहरादून
- (2) श्री पवन कुमार लं.ला पुत्र श्री किशनलाल लीला निवासी पुराजी प्रावादों, श्रीगंगानगर द्वारा मैंसर्स कृष्णा टाकीज, श्रीगंगानगर रास्त मैंसर्स कृष्णा टाकीज, श्रीगंगानगर रास्त (प्रान्तिती)
- *(3) श्रीः /श्रीःमतीः / कुमारी------ (वह व्यक्ति जिसके प्रधियोग में सम्पत्ति है।)
- *(4) श्री/श्रीमती/कृमारी -----(वह व्यक्ति, जिसके बारे में श्रधोहस्ताक्षरी जानता है कि वह सम्पत्ति में हितबद्ध है।)

को यह सूचना जारी करके पूर्वोक्त सम्पत्ति के धर्जन के लिए कार्य-वाहियां करता हूँ उक्त सम्पत्ति के प्रर्जन के सम्बन्ध में कोई भी धाक्षेप---

- (का) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तारीख से 45 दिन की प्रविध या तत्सम्बन्धी व्यक्तियों पर सूचना की तामील से 30 विन की प्रविध, जो भी प्रविध बाद में समाप्त होती हो, के भीतर पूर्वीक व्यक्तियों में से किसी व्यक्ति द्वारा,
- (ख) इस सूचना के राजपत्र में प्रकाशन की नारीख से 45 दिन के भीतर उक्त स्थावर सन्पन्ति में हितबद्ध किसी ग्रन्थ व्यक्ति द्वारा, श्रद्धोहस्ताक्षरी के पास लिखित में किये जा सकेंगे।

स्पष्टोकरण:—इसमें प्रयुक्त गर्व्दां भीर पदों का, जो प्रायकर अधि-नियम, 1961 (1961 का 43) के प्रष्याय 20 क में परिभाषित है, वहीं मर्थ होगा जो उस प्रष्याय में दिया गया है।

अन्म चो

मैसमं कृष्णः टाकीज, 28 ४०डिस्ट्रियल ऐरिया, श्रीगंगानगर का 7 प्रति-गान भाग जो उप पंजियक श्रीगंगानगर द्वारा कम संख्या 2192 दिनांक 5-10-81 पर पंजियद्व विकय पत्र में भीर विस्तृत रूप से विवरणित है।

(मोहन सिंह)

तारीख 14-7-82

सक्षम प्राधिकारी

मोहर.....

सहायक आयकर अध्यक्त (निरीक्षण)

*(जो लागुन हो उसे फाट वीजिन्)

घर्जन रंज, जंबपर

NOTICE UNDER SECTION 269 D (1) OF THE INCOME TAX ACT, 1961 (43 OF 1961)

Ref. No. 1257/

Government of India

office of the I.A.C. Acquisition Range, JAIPUR dated 14/7/82

Whereas, I, Mohan Singh being the competent authority under Section 269B of the Income Tax Act, 1961(43 of 1961) (herein after referred to as the 'said act'), have reason to believe that the immovable property having a fair market value exceeding Rs. 25,000 and bearing No.. . Building situated at Sriganganagar (and more fully described in the schedule annexed hereto), has been transferred under the Registration Act, 1908 (16 of 1908) in the office of the registering officer at Sriganganagar on 5-10-81 for an apparent consideration which is less the fair market value of the aforesaid property and I have reason to believe that fair market value of property as aforesaid exceeds the apparent consideration therefor by more than fifteen percent of such apparent consideration and that the consideration for such transfer as agreed to between the parties has not been truly stated in the said instrument of transfer with the object of:-

- (a) facilitating the reduction or evasion of the liability of the transferor to pay tax under the said Act in respect of any income arising from the transfer; and/or
- (b) facilitating the concealment of any income or any moneys or other assets which have not been or which ought to be disclosed by the Transferee for the purposes of the Indian Incometax Act, 1922 (11 of 1922) of the said Act or the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957);
- Now therefore, in pursuance of section 269C of the said Act, I hereby initiate proceedings for the acquisition of the aforesaid property by the issue of this notice hereby under sub-section (1) of section 269D of the said act to the following persons namely:—
- (1) Shri Mahabir Pd. Gupta s/o Sh. Nanakchand Gupta R/o Ganganagar at present 3-Preetam Road, Dalanwala, Dehradun.(Transferor)
- (2) Shri Pawan Kumar Lilla S/o Sh. Kishanlal Lilla R/o Old Abadi Sriganganagar, C/o Krishna Talkies, Sriganganagar...(Transferee)

*(3) Shri/Shrimati/Kumarı,...(Person in occupation of the.......property)

*(4) Shri/Shrimati/Kumar....(Person whom the....

......undersigned knows to be interested in the property objections, if any, to the acquisition of the said property may be made in writing to the undersigned:—

- (a) by any of the aforesaid persons within period of 45 days from the date of publication of this notice in the Official Gazette or a period of 30 days from the service of notice on the respective persons, whichever period expires later;
- (b) by any other person interested in the said immovable property, within 45 days from the date of the publication of this notice in the Official Gazette.

Explanation:—The terms and expressions used herein as are defined in Chapter XXA of the said Act, shall have the same meaning as given in that Chapter.

SCHEDULE

7% share of M/s. Krishna Talkies, 28-Industrial Area, Sriganganagar and more fully described in the sale deed registered by S.R. Sriganganagar vide No. 2192 dated 5-10-81.

(MOHAN SINGH)

Competent Authority

Seal:

Date: 14-7-82

(Inspecting Assistant Commissioner of Income Tax Acquisition Range, Jaipur).

^{*}Strike off where not applicable.